VOL- XI | ISSUE- II | FEBRUARY | 2024 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 8.02 | ISSN 2349-638x

भारतीय इतिहास में महिलाओं का योगदान

सहायक आचार्य पंकज कुमार ;
MA History, NET, RSET History)
राजकीय महाविद्यालय हिन्दुमलकोट (श्रीगंगानगर)

❖ **शोध आलेख सार** –भारतीय इतिहास में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है प्राचीन काल मध्यकाल आधुनिक इतिहास में महिलाओं का योगदान है विश्व की बहुत सी सभ्यता पनपी जिसमें सत्ता महिलाओं के हाथों में रही है और वहीमातृसत्तात्मक परिवार की जानकारी मिलती है प्राचीन वेदों में भी महिलाओं का योगदान है ऋग्वेद में बहुत से श्लोक है जिनका निर्माण महिलाओं के द्वारा किया गया है विश्व में वह प्राचीन भारत में बहुत से राज्य ऐसे रहे हैं जिन पर महिलाओं के द्वारा शासन किया गया। मातृप्रधान राज्यो में स्वतंत्रता, समानता व उन्नति को देखा जा सकता है प्राचीन काल में महिला शिक्षिका कुलपति आदि का उल्लेख मिलता है उन्होंने उपाध्याया भी कहा जाता था घर, परिवार, समाज, राज्य,देष, शिक्षा, प्रशासन, रक्षा, विदेश आदि क्षेत्रों में महिलाओं का अविश्वसनीय योगदान रहा है लेकिन समय चक्र में कुछ समय ऐसा आया जहां महिलाओं का ह्रास काल माना जाता है दिन में उत्तर वैदिक काल, गुप्त काल और मध्यकाल में महिलाओं की स्थिति निम्न रही है लेकिन फिर भी कुछ ऐसे उदाहरण है जो उनके साहस शौर्य का बखान ऐतिहासिकता को सिद्ध करते हैं।

❖ **मूलशब्द**–महिला शिक्षा, प्रशासन, शासन, वैदिक साहित्य योगदान, महिला अधिकार, गरिमापूर्ण जीवन, वेदों में योगदान सल्तनत शासन में योगदान, मध्यकालीन व आधुनिक साहित्य में योगदान व स्वतंत्रता संग्राम में योगदान इत्यादि।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत शोध पत्र प्राचीन, मध्यकालीन, आधुनिक महिलाओं पर ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण के साथ तथ्यात्मक सामग्री पर आधारित है। शोध पत्र में प्रमुख पुस्तकों के साथ ऐतिहासिक साक्ष्यों को शामिल किया गया है।

शोध के उद्देश्य

1- प्राचीन ऐतिहासिक महिलाओं की स्थिति का पता लगाना
2- महिला सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करना
3- प्राचीन इतिहास में महिलाओं की सामाजिक, राजनीति, आर्थिक व्यवस्था में योगदान का पता लगाना
4- ऐतिहासिक काल में व आधुनिक इतिहास में महिलाओं द्वारा किए गए कारण से अवगत करवाना

हम महिला शक्ति का अवलोकन वेदों में वर्णित ‘‘यत्र नार्यस्तु पुज्यते, रमन्ते तत्र देवता’’ से शुरू करते हैं वेदों में साहित्य में स्त्री की महता व महिमा को स्वीकार किया गया है। पौराणिक मान्यता में महिलाओं को त्रिदेवो की शक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है। सृष्टि का सृजन व संहार सभी इसकी गोद में पलते हैं। भारत की प्राचीन सभ्यता में भी महिलाओं के विषय में प्रमाण मिलते हैं कालीबंगा में कुमार देवी की मुद्रा मिली है, जहां

मातृ सत्तात्मक परिवार की जानकारी मिलती है। सिंधु घाटी सभ्यता में एक महिला का चित्र मिला है जिसके गर्भ में पौधा निकल रहा है उसे उर्वरा की देवी कहा गया है। मोहनजोदड़ो से एक नृतकी की मूर्ति मिली है जो कला को प्रदर्शित करती है, वह महिलाओं को रंगमंच की रुचि को प्रदर्शित करता है। वैदिक काल में महिलाओं की उन्नति का काल माना जाता है ऋग्वेद के बहुत सारे ऋचाओ का लेखक वैदिक कालीन महिलाओं के द्वारा किया गया था। ऋग्वैदिक महिलाओं में गार्गी, लोपामुद्रा, मैत्रयी, आपला, घोषा,सिकता,पुलोमी,शची, देवयानी आदि महिलाओं का उल्लेख मिलता है, यह विदूषी महिलाएं थीं जिन्होंने ऋग्वेद की ऋचाओ का निर्माण किया था विदेश जनक के दरबार में याज्ञवल्कय ऋषि व गार्गी संवाद दिया गया है। लोपामुद्रा एक क्षत्रिय कन्या थी जिसका विवाह अगस्तय ऋषि के साथ होता है देवयानी ब्राह्मण कन्या थी। वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति उच्च थी, उनको उपनयन संस्कार का अधिकार था। वह जनेऊ धारण कर सकती थी। विवाह में उनकी पसंद को प्राथमिकता दी जाती थी। वह विश्व विद्यालयों में कुलपतियों के पद को भी संभालती थी। लेकिनउत्तरवैदिक काल में महिलाओं की स्थिति में थोड़ी गिरावट आती है वैदिक काल के बाद महाजनपद काल में भी कई महिलाओं की जानकारी मिलती है जिनमें बुद्ध की मौसी प्रजापति गौतमी शामिल है। जिससे बुद्ध ने प्रथम बौद्ध भिक्षुणी का दर्जा प्रदान किया था। बुद्ध ने गणिका आम्रपाली को भी बौद्धधर्म हेतु दीक्षित किया था, उसने अपनी आम्रकुटी शाला बुद्ध को दान में दी थी, जहां जैन धर्म महिलाओं को दीक्षा देने में कठोर था लेकिन फिर भी चन्दना नामक महिलाआ को जैन धर्म में शामिल किया था। अंग जनपद की महिला विशाखा ने जैन विहारो के लिए सर्वाधिक धन दान में दिया था इसके साथ ही भक्तिकाल व सूफी मत में भी महिलाओं ने अपनी भूमिका निर्वाह किया है। ६वीं सदी में विश्व की प्रथम महिला सूफी संत राबिया का उल्लेख मिलता है जिसने योगिक मत को अपनाया था, भारत में भी कई महिला संतों ने अपने ज्ञान, भक्ति, कर्म, ईश्वर, आराधना से भारत की सभ्यता में संस्कृति में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया है इनमें दक्षिण भारत की आलवार संत आण्डाल प्रमुख है जिसे दक्षिण भारत की मीरा कहा जाता है नयनार महिला संतो में दक्षिण भारत में करिकाल अमैयार का नाम आता है यह शैव मत को मानती थी इसने अपने हाथों से चलकर मानसरोवर की यात्रा की थी इन महिलाओं ने आध्यात्मिक में इतनी प्रसिद्धि प्राप्त की जो आज भी महिलाओं के इतिहास कोगौरवानित करती है मौर्य काल में अशोक की माता सुभद्रांगी की भी जानकारी मिलती है दक्षिण के ग्रन्थो में इसे धर्मा कहा गया है अशोक की रानी कारूवाकी का उल्लेख इलाहाबाद अभिलेख में मिलता है जिसमें अपने द्वारा दान दिए जाने का उल्लेख मिलता है राजस्थान में कई ऐसी महिलाएं जिनके भारतीय इतिहास में अतुलनीय योगदान है जिनमें चित्तौड़ की रानी पद्मिनी का नाम प्रमुख है जिसने अपने कुल की आन बान शान का वह शौर्य को बनाए रखते हुए चित्तौड़ पर अलाउद्दीन खिलजी ने १३०३ में आक्रमण किया था तब पद्मिनी ने १६०० महिलाओं के साथ ऐतिहासिक जौहर व्रत किया था रानी पद्मिनी सुंदरता व बुद्धि दोनों का समिश्रण थी अन्य महिलाओं में चौहान रानी रूद्राणीयोगिक क्रिया में निपुंण थी और कर्पूरी देवी जिसने पृथ्वीराज की अल्पायु में अजमेर का प्रशासन संभाला था यह भारत की प्रथम हिंदू शासिका मानी जाती है।

गुप्त काल में चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त जिसने राष्ट्रकूट वंश के राज्य में बतौर संरक्षिका जानकारी मिलती है यह उसके पूना ताम्र

पत्र में लिखा गया है कि इतिहास में पृथ्वीराज में संयोगिता का भी वर्णन मिलता है। दक्षिण भारत की काकतीय वंष की रानी रूद्रमा देवी जिसने महिला होते हुए भी प्रशासन व युद्ध कला में निपुण थी।

मध्य काल में भी महिलाओं ने उलेमा वर्ग के विरोध के बावजूद भी प्रशासन व राजनीति में अपना अतुल्य योगदान दिया, जिसमें रजिया सुल्तान नाम प्रमुख है उसने महिला होते हुए भी जिसने मध्यकाल में एक सुल्तान बनाकर महिलाओं को एक नया स्वरूप प्रदान किया है उलेमा वर्ग व अमीरों ने उनके शासन बनने का बहुतरोष प्रकट किया, लेकिन उनका ४ वर्ष की कार्यकाल अत्यन्त गौरव पूर्ण रहा था इसके साथ ही मुगल काल में बहुत से महिलाएं एक अच्छी प्रशासकव कवयित्री समाज सुधार थी जिनमें कई नाम प्रमुख है हमीदाबानोबेगम,गुलबन्दनबेगम, मुमताजमहल, जहाआरा, जैबुनिस्सा आदि महिलाओ का मध्यकालीन साहित्य में प्रमुख योगदान था जिसके बाद ही आधुनिक इतिहास में कई महिलाएं आती है रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, अहिल्याबाई होल्कर, रानी चेन्नम्मा, जीजाबाई यह सभी महिलाएं सशक्त महिलाएं थीं जिन्होंने प्रशासन, कला व युद्ध आदि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है इसके साथ ही भारत में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई महिलाओं ने भारत की आजादी में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया । जैसे सरोजनी नायडू, एनी बेसेंट, कल्पना दत्ता प्रीतिलता, बीना दास, अरुणा आसफ अली, रतन शास्त्री, अंजना देवी चौधरी,किषोरी देवी बहुत ही महिलाएं जिनके नाम गिनना मुश्किल है और जब भारत का संविधान बना उसमें महिलाओं ने बढ चढकर भाग लिया था। संविधान सभा १५ महिला चुनी की चीन में से ८ महिलाओं ने संविधान पर हस्ताक्षर किया जैसे हंसा मेहता, एनीमस्करनी, बेगम एजाज रसूल, दुर्गाबाई आदि ने सहयोग प्रदान किया है स्वतंत्र भारत में भी महिला ने अपना कार्यों से सुषोभित किया है जैसे इंदिरा गांधी, प्रतिभा पाटिल,मीरा कुमार, कल्पना चावला, वसुंधरा राजे, द्रोपती मूर्म, सुमित्रा सिंह आदि वर्तमान संषक्त महिलाएं है। इस प्रकार इस मुद्दे पर जितना लिखा जाए उतना कम है कोई भी महिला देश, परिवार, समाज व विष्व में उनका हर क्षेत्र में सराहनीय योगदान से देश को खुषहाली की तरफ अग्रसर करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सुची -

१. आधुनिक भारत का इतिहास - बी.एल. ग्रोवर
२. प्राचीन भारत का इतिहास व संस्कृति - के.सी. श्रीवास्तव, डॉ. हरिषचन्द्र वर्मा
३. आरबीएससी व एनसीईआरटी की पुस्तको का संकलन
४. राजस्थान का इतिहास - डॉ. हुकुमचन्द जैन
5- समाचार पत्रो का संकलन - दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, राजस्थान पत्रिका आदि मे लेखो का संकलन